# "चिलगोजा शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 23 अगस्त 2018 को ग्राम पंचायत मूरंग, जिला किन्नौर में चिलगोजा प्रजाति के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) द्वारा वित्त पोषित परियोजना "मूरंग वन परिक्षेत्र, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश में वैज्ञानिक हस्तक्षेप के माध्यम से चिलगोजा के संरक्षण के लिए जागरूकता" के तहत **"चिलगोजा शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान"** पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम में ग्राम पंचायत मूरंग के 48 किसानों तथा बागवानों ने भाग लिया ।

डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने मुख्य अतिथि सुश्री रतन मंजरी नेगी, अध्यक्ष महिला कल्याण परिषद, किन्नौर, श्री अनूप कुमार नेगी उप प्रधान ग्राम पंचायत, मूरंग, वन अधिकारियों, वक्ताओं तथा किसानों एवं बागवानों का अभिनन्दन एवं स्वागत किया । अपने स्वागत संबोधन में डॉ. स्वर्ण लता ने कहा कि चिलगोजा जिला किन्नौर का पारिस्थितिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से एक महत्वपूर्ण वृक्ष है । यह अपनी स्वादिष्ट एवं पोषक गिरी के लिए प्रसिद्ध है तथा विश्व में यह बहुत ही कम स्थानों में पाया जाता है । यह किन्नौर के लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत होने के साथ साथ उनके आहार एवं रीति -रिवाजों का भी अभिन्न् अंग है । हिमाचल प्रदेश में यह प्रजाति किन्नौर (2,040 हेक्टेयर) तथा चम्बा (20 हेक्टेयर) जिलों में पायी जाती है, परन्तु चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की अवैज्ञानिक तरीके

से कटाई आज के समय में किन्नौर वन क्षेत्र की  बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है । इन वृक्षों से चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए शाखाओं की अनियंत्रित कटाई से उत्पन्न समस्या से अधिकतर लोग परिचित नहीं हैं जिससे न केवल इसका पुनर्जनन कम हो रहा है अपितु शंकुओं के उत्पादन पर भी विपरीत प्रभाव पड़ रहा है । यदि यह स्थिति यथावत बनी रही तो वह दिन दूर नहीं जब यह वृक्ष इस क्षेत्र से लुप्त हो जायेंगें और लोग इससे होने वाले लाभ से हमेशा के लिए वंचित हो जाएँगे । उन्होंने यह भी बताया की वन कानून के तहत प्राकृतिक वन सरकारी संपत्ति होते हैं परन्तु किन्नौर के लोगों  को चिलगोजा बीज एकत्रित करने के अधिकार हैं इसलिए इस तरह की विनाशकारी कटाई से होने वाले नुकसान से बचने के लिए न केवल वैज्ञानिक हस्तक्षेप अपितु लोगों के हस्तक्षेप की भी अत्यधिक आवश्यकता है ताकि इस क्षेत्र में चिलगोजा वृक्षों को हो रही क्षति से बचाया जा सके । इससे न केवल आने वाली भावी पीढ़ियों को इस बहुमूल्य वन सम्पदा का लाभ पहुंचेगा अपितु अन्य पर्यावरणीय सेवाएं भी प्राप्त होती रहेंगी ।

मुख्य अतिथि, कुमारी रतन मंजरी, अध्यक्ष महिला कल्याण परिषद, किन्नौर ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ कर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि चिलगोजा वृक्षों का किन्नौर के लोगों कि आर्थिक विकास एवं रीति रिवाजों में महत्वपूर्ण योगदान है  तथा यहाँ के लोग चिलगोजा वृक्षों पर अत्यधिक निर्भर हैं । उन्होंने लोगों से चिलगोजा के शंकुओं को एकत्रित करने के  दौरान वृक्षों को हो रही क्षति को रोकने के लिए आगे आने को कहा तथा उन्होंने यह  भी कहा कि महिलाओं को विशेष तौर पर इसके संरक्षण के लिए आगे आना होगा क्योंकि महिलायें चिलगोजा एवं इससे सम्बंधित रीति रिवाजों से अत्यधिक जुड़ीं हुई  हैं । उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला तथा राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक को इस महत्वपूर्ण विषय पर जिला किन्नौर के किसानों एवं बागवानों को प्रशिक्षण देने तथा जागरूक करने के लिए धन्यवाद किया । कुमारी रतन मंजरी नेगी ने ‘चिलगोजा वन संरक्षण में सामुदायिक योगदान के महत्व’ के बारे में भी लोगों को बताया । उन्होंने यह भी  कहा  कि यह किन्नौर में रहने वाले हर एक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वे चिलगोजा जैसे अनमोल प्राकृतिक संसाधन की रक्षा के लिए स्वेच्छा से आगे आकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें ।

इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए श्री अनूप कुमार  नेगी, पंचायत उप प्रधान, मूरंग ने चिलगोजा किन्नौर क्षेत्र में पाया जाने वाला एक बहुत ही महत्वपूर्ण पौधा है तथा इसका यहाँ के निवासियों की आर्थिकी एवं पर्यावरण संतुलन में इसका महत्वपूर्ण योगदान है पर चिलगोजा के शंकुओं को एकत्रित करने के दौरान शाखाओं की अंधाधुंध कटाई बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है तथा इस समस्या से निपटने के लिए  लोगों को  ही आगे आना होगा । उन्होंने संस्थान के प्रयास की सराहना की तथा आशा व्यक्त की कि चिलगोजा के जंगलों के सरंक्षण के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम से उनके गांव के किसान एवं बागवान ज़रूर जागरूक एवं लाभान्वित होंगे । उन्होंने भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन का आग्रह किया ।

तकनीकी सत्र के दौरान चिलगोजा  संरक्षण से संबंधित विभिन्न विषयों पर किसानों एवं बागवानों को विस्तार से जानकारी दी गई । डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने किसानों एवं बागवानों को 'चिलगोजा संरक्षण में चिलगोजा शंकुओं के सतत् तुड़ान की आवश्यकता' से अवगत करवाया तथा चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की असंवहनीय तरीके से कटाई से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए  उचित  उपकरण (मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर) के प्रयोग की आवश्यकता पर बल दिया ।

श्री, नीमा छेरिंग नेगी, वन परिक्षत्र अधिकारी ने 'चिलगोजा वन क्षेत्र की समस्याओं तथा उनके समाधान' के बारे में लोगों को जागरूक किया । उन्होंने यह भी कि चिलगोजा की पैदावार  और पुनर्जनन को बढ़ाने के लिए चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के दौरान शाखाओं की अत्यधिक कटाई से चिलगोजा के वृक्षों को हो रही क्षति को रोकना होगा क्योंकि इस क्षेत्र के लोग आर्थिक रूप से चिलगोजा वृक्षों पर अत्यधिक निर्भर हैं । इसी दौरान लोगों

ने चिलगोजा से सम्बंधित अपनी समस्याएं वन अधिकारियों के समक्ष रखीं एवं वन अधिकारियों ने भी उन्हें पूर्ण सहयोग का आशवासन दिया ।

श्री जवाला प्रसाद, तकनीकी अधिकारी ने “चिलगोजा के पोधरोपण” के बारे में लोगो को जानकारी दी तथा चिलगोजा के पैदावार को बढ़ाने के लिए वृक्षारोपण हेतु अच्छी गुणवता के

पौधों के चयन के आवश्यकता के बारे बताया । उन्होंने यह भी कहा यदि वनों में अच्छी गुणवता वाले वृक्ष दिखें तो उसकी जानकारी वे वन विभाग के अधिकारियों को आवश्य दें ताकि वे उसी गुणवता वाले पोधों की नर्सरी तैयार कर सकें । इससे वन विभाग इन पौधों को वनों में वृक्षरोपित कर अच्छी गुणवत्ता वाले चिलगोजा वन तैयार कर सकें जिससे न केवल चिलगोजा के बीजों की पैदावार बढ़ेगी अपितु किसानो को बीजों के व्यापार में भी अधिक मुनाफा होगा ।

कुमारी वर्षा, परियोजना सहायक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने ‘मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर’ के संचालन तथा इसकी सहायता से चिलगोजा शंकुओं को कैसे तोड़ा जाये के बारे में लोगों को साथ के चिलगोजा वन क्षेत्र में ले जाकर इस तकनीक का प्रदर्शन किया । इसी दौरान चार मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर भी पंचायत प्रधान को मुख्य अतिथि द्वारा प्रदान किये गए ।

अंत में डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि सुश्री रतन मंजरी नेगी, उप प्रधान, श्री अनूप कुमार नेगी ग्राम पंचायत, मूरंग, वन अधिकारियों तथा किसानों एवं बागवानों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। उन्होंने चिलगोजा परियोजना में प्रस्तावित जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन हेतु सभी आवश्यक सुविधायें प्रदान करने के लिए निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला एवं वित्तीय सहायता के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड), शिमला, हिमाचल प्रदेश का भी धन्यवाद किया।

NABARD
चिलगोजा के शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा
पर
23 अगस्त, 2018
ग्राम पंचायत मूरंग, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश
आयोजक: हिमालयन वन अनुसंधान संसथान, शिमला
सौजन्य: राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक, शिमला

NABARD
पर
23 अगस्त, 2018
मूरंग

************************************